कर्मयोग (कर्मके माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति) : खण्ड २

कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

जून २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ८७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

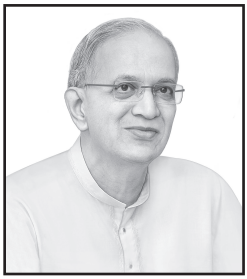

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १०.५.२०२३ तक १२४ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०९१ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षण फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. 'कर्मयोग' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ ११

२. कर्मकी उत्पत्ति ११

३. क्रिया एवं कृत्य १३

४. कार्य १३

* कार्यका कारण १३
* कार्य सिद्ध (सफल) होने हेतु आवश्यक घटक एवं उनका महत्त्व १४
* कर्म (कार्य) बिगडनेका कारण २१

५. 'कर्म' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ २२

६. कर्मका उद्देश्य २८

७. कर्मका महत्त्व २९

८. कर्मकी विशेषताएं ३१

* कर्म शरीरसे सम्बन्धित होना ३१
* कर्म प्रवाह अखण्ड जारी रहना ३१
* कर्म जडरूप होना ३२

* कर्म एवं मन ३२
* निश्चयानुरूप कर्म होना ३४
* कर्मका अहंकारसे चिपका होना ३४
* कर्मका सम्बन्ध संसारसे होना, स्वरूपसे नहीं ३४
* जीवके जन्म-मृत्यु के चक्रमें फंसनेका एकमात्र कारण कर्म ही होना ३५
* पूर्वजन्मके कर्मके अनुसार मनुष्यको जन्म प्राप्त होना ३६
* सामान्य व्यक्तिका अनेक जन्मोंसे दुःख भोगते रहना ३७
* उचित व अनुचित कर्म कौनसे, यह बताना विद्वानोंको भी कठिन ३७
* सर्वसामान्य व्यक्तिका कर्म एवं उन्नत पुरुष तथा अवतारों की लीलाएं ४०

९. कर्मके प्रकार ४१

* साधारणतया प्रकार (ऐच्छिक तथा अनैच्छिक क्रिया / कर्म) ४१
* साधना हेतु पूरक कर्म (नित्यकर्म, श्रौत, स्मार्त, पौराणिक कर्म इ.) ४६
* कर्मयोगानुसार प्रकार ५४
* ज्ञानयोगानुसार प्रकार ५९

卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ६५

卐 'कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार'सम्बन्धी गहन ज्ञान ७०

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।' (श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ४७) अर्थात आपका अधिकार केवल (कर्म) करना है । कर्मफलकी आपको इच्छा नहीं रखनी चाहिए ।

भगवानके इस आशीर्वचनमें कर्मयोगका सार समाहित है ।

कर्म अटल है । जीवित रहनेके लिए भी श्वास लेनेका कर्म करना ही पडता है । कर्म करते समय व्यक्तिका निरन्तर अन्योंसे लेन-देन निर्मित होता है । साथ ही उसके प्रत्येक कर्मका पाप-पुण्यात्मक फल भी प्राप्त होता है । रागद्वेषादी स्वभावदोष, कुबुद्धि, अधर्माचरण, कर्म करते समय हो रही चूकोंके कारण व्यक्तिके पाप बढते हैं । उसका दुःखमय फल भी इस अथवा अगले किसी जन्ममें भुगतना ही पडता है । इस प्रकार जन्म-मृत्युका चक्र चलता ही रहता है । इसीको 'कर्मबन्धन' कहते हैं । ऐसेमें 'जन्म-मृत्युके चक्रसे कैसे मुक्ति पाएं', इसका मार्ग कर्मयोग बताता है ।

कर्मफल न हो, तो ही मनुष्य बन्धनमुक्त हो सकता है । किसी भी कर्मकी आसक्ति, अभिमान तथा फलकी अपेक्षा न रखना, 'प्रत्येक कर्म ईश्वरकी पूजा करनेके भावसे करना', कर्म होनेपर उसे ईश्वरके चरणोंमें अर्पण करना इत्यादिसे कर्म में निष्कामता उत्पन्न होती है । ऐसा होनेपर कर्मफल लागू नहीं होता । निष्कामताके कारण अन्तःकरण निर्मल होकर निरन्तर आनन्दकी अनुभूति होती है ।

कर्मयोग यह भी सिखाता है कि ईश्वरप्राप्तिके उपरान्त भी कर्मसंन्यास न लेकर समाजको साधनाकी ओर मोडनेका कार्य करते रहना चाहिए ।

दैनिक जीवनमें कर्म करते समय ही 'कर्मयोग'को यथार्थरूपसे आचरणमें कैसे लाएं, इसपर यह ग्रन्थमाला सुबोध मार्गदर्शन करती है । विषयकी व्याप्ति एवं ग्रन्थोंकी पृष्ठसंख्याकी सीमाका विचार कर 'कर्मयोग'का विषय विभिन्न ग्रन्थोंमें विभाजित किया है । (अन्य ग्रन्थोंका विज्ञापन इसी ग्रन्थ के अन्तमें दिया गया है ।) – **संकलनकर्ता**